श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध

(खंड-काव्य)

शिव मोहन यादव

श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध

श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध

(खंड-काव्य)

शिव मोहन यादव

अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि.
Advik Publication Pvt. Ltd.

©सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक/प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीन, फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध (खंड-काव्य)

ISBN: 978-81-977724-7-4
प्रथम संस्करण : 2024

प्रकाशक
अद्विक पब्लिकेशन
41 हसनपुर, आई. पी. एक्सटेंशन
पटपड़गंज, दिल्ली 110092
Tel: 011-43510732, 9560397075,
ई मेल : advikpublication1@gmail.com
Web :www.advikpublication.com

© स्वत्वाधिकार : **शिव मोहन यादव**
चित्रकार : राज कुमार घोष
प्रूफ रीडिंग : लोमेश गिरि
पुस्तक सज्जा : बिपिन राजभर
मूल्य : 160/-

मुद्रण: मल्टीप्रिंट, दिल्ली -110092

इस पुस्तक में लिखित सामग्री लेखक/लेखिका के निजी विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी न्यायिक मामले का क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

मानव-सेवी, देवतुल्य
पिता श्री सूरज सिंह यादव
को सादर समर्पित!

प्रस्तावना

आजकल महाकाव्य और खंड-काव्य लेखन लुप्त-सा हो गया है। कई दशकों से कोई ऐसे प्रबंध-काव्य सामने नहीं आए, जिन्होंने अपनी छाप छोड़ी हो। कदाचित लिखे भी जा रहे होंगे, तो सामने नहीं आ रहे। यद्यपि, मैंने भी इस रचना को लिखने के प्रारंभ में यह नहीं सोचा था कि यह एक प्रबंध-काव्य के रूप में निर्मित हो जाएगा, तथापि यह खंड-काव्य के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है।

आपको इस पुस्तक का शीर्षक देखते ही प्रतीत होगा कि 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध!' भला ऐसा कब हो गया! अधिकांश लोगों, पाठकों और यहाँ तक कि पुराण अध्येयताओं को भी ऐसे युद्ध के विषय में किंचित ही ज्ञात होगा। पढ़ने से पूर्व पाठक इस रचना को उदासीनता और हल्के में लेंगे। ऐसा स्वाभाविक भी है, क्योंकि जिन्होंने श्रीकृष्ण और अर्जुन, दोनों को एक-दूसरे का मित्र ही देखा है, अर्जुन को गीता-ज्ञान लेते सुना है, उन्हें रण-क्षेत्र में एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा देखना, भला कौन सोच सकता है!

तो, सर्वप्रथम आपको ये बताता हूँ कि मैंने यह किताब क्यों लिखी? जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे लिखना-पढ़ना और पढ़ाना रुचिकर लगता है। मेरे घर की अलमारियाँ किताबों से भरी हैं। उनमें सबसे अधिक किताबें हैं साहित्य कीं। साहित्य में भी सर्वाधिक हैं बाल-साहित्य कीं! इस पठन-पाठन की परंपरा में जब श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस की किताबें, कुछेक पुराण, उपनिषद और पौराणिक कहानियाँ पढ़ने सौभाग्य मिला, उन्हीं में कहीं 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' पढ़ने में आ गया। यह किसी पौराणिक कथा की पुस्तक में संकलित कथा थी। इसे पढ़कर भाव-विभोर हो गए और यह कथा मेरे अंतःकरण में बस-सी गई। कथा ने मुझे इतना

प्रभावित किया कि एक बार विचार आया कि इसके लिए छंदबद्ध रचना लिखूँ। लेखन शुरू किया तो विचार आया कि इस पर तो पूरा खंड-काव्य लिखा जा सकता है। लेखन शुरू हो गया। कथा 2019 के आसपास पढ़ी होगी, वर्ष 2021 में लिखने का विचार आया। पूरा लिख पाए गुरु-पूर्णिमा 2024 में!

अब प्रश्न उठता है कि आपको यह किताब क्यों पढ़नी चाहिए? तो, मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि यह कथा गूढ़ तथा बेहद रोचक है; चूँकि आपके समक्ष प्रबंध-काव्य के रूप में प्रस्तुत है, तो आप लयबद्धता से पढ़ पाएँगे। मुझे विश्वास है कि यह आपको रोमांचित कर आपकी बौद्धिक शक्ति को भी संबल प्रदान करेगी।

प्रारंभ में इसके लेखन से पूर्व मुझे लग रहा था कि लिख भी पाऊँगा या नहीं। लिखने बैठा तो किताब आपके हाथों तक भी पहुँच गई। इस लेखन यात्रा में निर्जन मेरा सहायक रहा है। अकेले में ही मन से लिख पाया हूँ। कुछ चौपाइयाँ कार्यालय के खाली समय में, कुछ जबरदस्ती कलम घिसने से और बाकी सब माँ सरस्वती की कृपा से स्वतः प्रवाह में लिख गई हैं।

यह प्रस्तावना मैं तब लिख रहा हूँ, जब किताब प्रकाशन में है और प्रकाशित होने के लिए तैयार है। सच कहूँ तो प्रस्तावना तभी लिखी जा सकती है, जब किताब पूरी लिखी जा चुकी हो। पूर्व में ही प्रस्तावना लिखकर रचनाकार रचना के प्रति ईमानदारी का निर्वहन नहीं कर सकता।

जब मुझे प्रस्तावना या भूमिका लिखने बारे में जब कहा गया तो मैंने सोचा कि किसी प्रतिष्ठित साहित्यकार या कवि से लिखवा लेता हूँ। फिर विचार आया कि खंड-काव्य के बारे में मुझसे अधिक भला कौन ही जानता है। इसलिए अपने पाठकों से अपने अंतर्मन की बातें मैं स्वयं ही कर रहा हूँ।

चलिए, अधिक वार्ता नहीं करूँगा। आप किताब पढ़िए, और संभव हो तो पत्र लिखकर बताइएगा कि रचना कैसी लगी!

नई दिल्ली

गुरु-पूर्णिमा, वर्ष 2024

- शिव मोहन यादव,

ग्राम- नेरा कृपालपुर, पोस्ट- गौरीकरन,

जनपद- कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश-209115

अपनी बात

मेरे प्रिय पाठक!

आशा है आनंद से होंगे।

प्रस्तुत खंड-काव्य में छंदों की गेयता बनाए रखने के लिए मात्राओं का दोष दिख सकता है। रचनाकार छंदों के नियमों की पालना हेतु मात्रा-भार बढ़ाने या घटाने को विवश होते हैं। हालाँकि काव्य को व्याकरणिक दृष्टि से नहीं, भावनात्मक दृष्टि से देखना चाहिए और देखा भी जाता है। पुस्तक का शीर्षक 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' देखकर कौतूहल में तो होंगे ही, किंतु मुझे विश्वास है कि आप वर्णित कथा-वस्तु के सार को ग्रहण करेंगे।

गुरु-पूर्णिमा क्यों मनाई जाती है, इसका अभी स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। लोग यही कहते मिल जाएँगे कि गुरुओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए मनाई जाती है अथवा पौराणिक अध्येयता बता सकते हैं कि भगवान महर्षि वेदव्यास को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाई जाती है। किंतु प्रिय पाठक! स्पष्ट उत्तर आपको यह खंड-काव्य पढ़ने पर मिल जाएगा।

खंड-काव्य में वर्णित घटनाक्रम यानी 'श्रीकृष्ण-अर्जुन युद्ध' व्यास-पूर्णिमा यानी आषाढ़ी के दिन हुआ था। पौराणिक मतानुसार उस दिन वार गुरुवार था। विभिन्न गुरु इस युद्ध के साक्षी बने, कई गुरुओं ने युद्ध में सहभागिता की। इसमें जय-पराजय का निष्कर्ष भले न हुआ हो, किंतु अंत में सभी गुरुओं ने एक-दूसरे का मान-सम्मान किया। इसीलिए आगे चलकर आषाढ़ी को गुरुपूर्णिमा कहा जाने लगा। यह आज भी प्रचलित है। आज भी देश के कुछ क्षेत्रों में आषाढ़ माह के

अंतिम गुरुवार, चाहे वह गुरुपूर्णिमा ही हो, को ‘बाहरी पूजा’ या ‘देव पूजा’ की जाती है। यह भी मान्यता है कि किसान आने वाली फसलों समृद्धि के लिए ऐसा करते हैं।

तथापि, आप कथा का आनंद लीजिए!

- शिव मोहन यादव

मो.: 9616926050

ई-मेल: shivmohanyadavkanpur@gmail.com

आभार!

मैं इस पुस्तक के लेखन में सहयोग के लिए उस शक्ति का आभारी हूँ, जिसने मुझसे यह खंड-काव्य लिखवाया। जन्म से यहाँ तक लाने के लिए मैं अपने पिता श्री सूरज सिंह यादव, माता श्रीमती कुषमा देवी का भी आभारी हूँ। अनुज हरि मोहन यादव, जिन्होंने घर के उत्तरदायित्वों का निर्वहन किया और मुझे लिखने का समय मिल सका।

इन सबके साथ, मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती प्रियंका यादव का विशेष कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने आवास का वातावरण ऐसा बनाए रखा, जिसमें मैं लिख सका। वह मेरी लेखन-यात्रा की सहभागिनी हैं और साक्षी भी। रचना के टंकण में भी उन्होंने मेरा सहयोग किया है।

एनसीईआरटी के मुख्य संपादक श्री बिज्ञान सुतार सर का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे समय देकर इस कार्य में सहयोग कराया। एनसीईआरटी के संपादक श्री जेपी मैथाणी सर का आभारी हूँ, जिन्होंने पुस्तक का अंतिम प्रूफ देखा-पढ़ा। यहीं कार्यरत प्रूफरीडर श्री लोमेश गिरि का आभारी हूँ, जिन्होंने प्रूफ देखा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए अद्विक पब्लिकेशन के संस्थापक श्री अशोक गुप्ता जी, पुस्तक की साज-सज्जा के लिए श्री बिपिन राजभर जी एवं आवरण चित्र तैयार करने के लिए चित्रकार श्री राज कुमार घोष का हृदय से आभारी हूँ।

सादर,

- शिव मोहन यादव

अनुक्रम

	मंगलाचरण	**15**
1.	अर्घ्य खंड	17
2.	चिंतन खंड	26
3.	ब्रह्मलोक भ्रमण खंड	33
4.	बैकुंठ भ्रमण खंड	40
5.	कैलाश भ्रमण खंड	44
6.	इंद्र-लोक भ्रमण खंड	51
7.	व्यथा खंड	55
8.	नारद-चित्रसेन संवाद	64
9.	अभयदान खंड	68
10.	नारद-श्रीकृष्ण संवाद	83
11.	युद्ध खंड	89

मंगलाचरण

प्रथम पूजते आपको, श्री गणपति-विघ्नेश ।
विधिवत काज सँवारिए, हरिए सभी कलेश ॥

नमन आपके चरण में, वंशीधर भगवान ।
जड़ता मेरी मिटाइए, उर में दीजे ज्ञान ॥

माँ वाणी! तुमको मैं ध्याऊँ ।
मन में हर पल तुमको लाऊँ ॥
सद्‌बुद्धि मुझे प्रदान करो ।
माता मेरा कल्याण करो ॥

माधव तुमको शीश नवाऊँ ।
माखन मिश्री भोग लगाऊँ ॥
मेरे मन मंदिर में आओ ।
मेरे सारे कष्ट मिटाओ ॥

संदीपनि मुनि से ज्ञान लिया ।
वेदों का उचित बखान किया ॥
नरकासुर का संहार किया ।
हर कन्या का उद्धार किया ॥

प्रभु मुझ पर भी उपकार करो ।
मेरा लेखन विस्तार करो ॥
मेरी नैया को पार करो ।
'मोहन' मेरा उद्धार करो ॥

ब्रह्मा, मधुरिपु, शिव का सुमिरन ।
सारे देवों का आराधन ॥
'मोहन' के उर में आ जाओ ।
प्रज्ञा-विवेक चमका जाओ ॥

अर्घ्य खंड

यमुना का रुचिर किनारा था ।
वह ब्रह्म-काल अति प्यारा था ॥
चिड़ियों का कलरव गान हुआ ।
फिर ऊषा का उत्थान हुआ ॥

उपवन की जागी तरुणाई ।
फूलों ने खुशबू बिखराई ॥
अब पवन जरा गतिबद्ध हुई ।
शीतलता भी समृद्ध हुई ॥

इक कुटिया तरुओं बीच घिरी ।
रहते हैं उसमें श्रेष्ठ ऋषी ॥
वे तपी और हैं बलशाली ।
तरुओं की करते रखवाली ॥

यमुना तट पर शोभायमान ।
हो रहे बाग, गुंजायमान ॥
तरु महिमा कौन बखान करे ?
मेरा भी मन गुणगान करे ॥

मेघों को रोक बुलाते हैं ।
नभ से जल-स्राव कराते हैं ॥
फल-फूल, औषधी, रंग, बीज ।
देते हैं उत्तम सभी चीज ॥

दूषित प्रवात हर लेते हैं ।
ऋतुचक्र श्रेष्ठ कर देते हैं ॥
जल का बहाव कम करवाते ।
मिट्टी-कटाव भी रुकवाते ॥

देते हैं सबको शुद्ध हवा ।
इनकी संगत है श्रेष्ठ दवा ॥
तरु सभी छाँव देते शीतल ।
वृक्षों में बेहतर हैं पीपल ॥

विश्राम स्थल बन जाते हैं ।
जल-दूषण भी रुकवाते हैं ॥
सब चर्म ठीक कर जाते हैं ।
रोगों से हमें बचाते हैं ॥

कर्णों का दुख हर लेते हैं ।
कोलाहल कम कर देते हैं ॥
तरु का निचोड़ बतलाते हैं ।
ये जीवन धन्य बनाते हैं ॥

जीते-जी नेह निभाते हैं ।
मरकर भी अमर कहाते हैं ॥
मृतप्राय अगर हो जाते हैं ।
ये तब भी आय बढ़ाते हैं ॥

ऋतु का संतुलन कराते हैं ।
आपदा दूर ले जाते हैं ॥
इनके अधीन, सब-कुछ कुलीन ।
इनकी महिमा वर्णन-विहीन ॥

वृक्षों की महिमा अनत, जीवों के सरताज।
तरु सेवा में रत वहाँ, मुनि गालव महराज ॥

कुटिया से मुनि बाहर आए ।
लखकर पशु-पक्षी मुसकाए ॥
वे संत वहाँ थे तपधारी ।
वे ध्यान-कर्म प्रिय अवतारी ॥

खुद को यमुना को अर्पित कर ।
निज काया उन्हें समर्पित कर ॥
मुनि गालव ने कुछ ध्यान किया ।
यमुना का स्तुतिगान किया ॥

मुनि डुबकी से बाहर निकले ।
दिनकर को देने अर्घ्य चले ॥
लालिमा पूर्व में छाई थी ।
रवि की छवि अधिक सुहाई थी ॥

अँजुरी में जल भर ध्यान किया ।
दृग मूँद उन्हें सम्मान दिया ॥
लेकिन कुछ अनरथ होना है ।
यह जीवन ईश-खिलौना है ॥

कुदरत के ढंग निराले थे ।
मुनि अर्घ्य चढ़ाने वाले थे ॥
जल-अर्पण को ज्यों हाथ बढ़े ।
रह गए चकित, रह गए खड़े ॥

अँजुरी में यों आभास हुआ ।
अंबर से ज्यों कुछ आ टपका ॥
देखा तो जल में पीक पड़ी ।
ज्यों पान चबाकर हो थूकी ॥

यह देखा, मुनि अति अकुलाए ।
दृग लाल, क्रोध से भर आए ॥
क्रोधित नयनों से नभ देखा ।
गंधर्व दिखा था यान चढ़ा ॥

बिन अर्घ्य दिए, जल छोड़ दिया ।
दाएँ कर से पुनि नीर लिया ॥
ज्वाला आँखों में तैरी है ।
यह चित्रसेन अति बैरी है ॥

देने को शाप हुए उद्यत ।
लेकिन फिर पलटा उनका मत ॥
'वर्षों की कठिन तपस्या है ।
देने में शाप समस्या है ॥

'यदि मैं इसको शापित कर दूँ ।
इसके कर्मों का उत्तर दूँ ॥
निज तप का मान भंग होगा ।
जीवन-यश भी अपंग होगा ॥

'मैं अभी यहाँ रुक जाता हूँ ।
इसको खुद दंड दिलाता हूँ ॥'
यह कह गालव ने क्रोध पिया ।
कर जोड़ भानु को नमन किया ॥

दिनकर से क्षमा-याचना कर ।
वे यमुना से निकले बाहर ॥
करके मन में संकल्प अटल ।
चल दिए कृष्ण के राजमहल ॥

'यदि कृष्ण न्याय के दाता हैं ।
यदि मोहन स्वयं विधाता हैं ॥
यदि मुझको न्याय दिलाएँगे ।
पापी के वधिक कहाएँगे ॥

‘यदि चित्रसेन को मारेंगे ।
इस पापी को संहारेंगे ॥
तब उनको गले लगाएँगे ।
उनको आशीष दिलाएँगे ॥’

सब सोच द्वारिका जा पहुँचे ।
अब तक थे रोष भाव उभरे ॥
जा पहुँचे सभा बीच गालव ।
बैठे थे नृप, मंत्री, दानव ॥

मुख देख सभी जन घबराए ।
केशव गद्दी से उठ आए ॥
नत होकर उन्हें प्रणाम किया ।
सिंहासन का सम्मान दिया ॥

लेकिन मुनि गालव झल्लाए ।
पुनि रोष भाव से भर आए ॥
“यह कैसा राज चलाते हो ?
कैसे अनर्थ करवाते हो ??

“क्या ऋषियों का भी मान नहीं ?
करवाते हो अपमान यहीं ॥
कब तक मुरलीधर यह होगा ।
कब पापी का वध तय होगा ??”

यह सुनकर केशव चकित हुए ।
ये पाप कहाँ से उदित हुए ??
प्रभु बोले– "मुनिवर बतलाओ ।
जो कष्ट मिला वह समझाओ ॥"

तब पूरा कृत्य बखान किया ।
क्रोधित हो दृश्य मचान किया ॥
गालव बोले– "प्रतिदान करो ।
अंतर्मन का हर कष्ट हरो ॥

"वध चित्रसेन का कर डालो ।
साहस ना हो तो बतला दो ॥
तब खींच उसे मैं लाऊँगा ।
यमलोक उसे पहुँचाऊँगा ॥

"जब मैं उसका शव पाऊँगा ।
तब ही चौखट से जाऊँगा ॥
उन्मूल मेरा जीवन होगा ।
या उसका अंतिम दिन होगा ॥"

माधव इतना सुन घबराए ।
कर जोड़ तभी आगे आए ॥
"मुनिवर! मत इतना शोक करो ।
थोड़ा-सा मन में धीर धरो ॥

"मैं उसको मार गिराऊँगा ।
तुमको सुकून पहुँचाऊँगा ॥"
गालव बोले– "क्या आज करें ?
कैसे तुम पर विश्वास करें ॥

"ऐसी बातें हैं सच–विहीन ।
कुछ वचन करो तो हो यकीन ॥"
यह सुनकर मोहन मुसकाए ।
फिर चिंता भाव उभर आए ॥

बेहद गंभीर हुए भगवन ।
बोले– "होगा इच्छा पालन ॥
मैं शीश सेन का लाऊँगा ।
मुनिवर! मैं वचन निभाऊँगा ॥

"हो भले आपको आस नहीं ।
यदि मेरे प्रति विश्वास नहीं ॥
मैं शपथ देवकी की खाऊँ ।
जो कहता हूँ– कर दिखलाऊँ ॥

"केवल कल तक का प्रण होगा ।
जल्दी ही उससे रण होगा ॥
मत मुनिवर और विकल होना ।
मन में मत अधिक क्रोध ढोना ॥"

‘मोहन’ ने धीर बँधाया था ।
सब विस्मय वहीं मिटाया था ॥
प्रभु पर थोड़ा विश्वास किया ।
कुछ मनन उन्होंने खास किया ॥

सुनकर मोहन के बोल भले ।
गालव अपने तप-धाम चले ॥
अब राजसभा को भंग किया ।
प्रभु ने निर्जन का संग किया ॥

चिंतन खंड

बैठे केशव चिंतित-निराश ।
मुख था मलीन, खुद थे उदास ॥
'संकल्प सत्य कर पाऊँगा ?
कैसे मैं वचन निभाऊँगा ??'

इतने में नारद मुनि आए ।
माधव को शोकाकुल पाए ॥
पहले कर जोड़ प्रणाम किया ।
चिंता निमित्त फिर पूछ लिया ॥

"हे सुखदाता! क्यों मुख मलीन ?
क्यों है चेहरे का भाव हीन ??
मुसकान थिरकती जहाँ सदा ।
किंचित हटती हो यदा-कदा ॥

"मुख-कमल आज क्यों मुरझाया ?
क्यों जग-स्वामी है घबराया ??"
यह सुन नारद को बैठाया ।
तब हाल हृदय का बतलाया ॥

"मैंने संकल्प उठाया है ।
गालव को धीर बँधाया है ॥
जो पीक सेन ने थूकी है ।
वह उसकी जाँ की भूखी है ॥"

मोहन ने सबकुछ ठाना था ।
जो कुछ उनको करवाना था ॥
केशव ने कुछ पत्ते खोले ।
भगवान ऋषी से यूँ बोले ॥

"है चित्रसेन की आयु बड़ी ।
उसकी मरने की नहीं घड़ी ॥
यदि ऐसे उसको मारूँगा ।
नियती को भी संहारूँगा ॥

"पर मुझको वचन निभाना है ।
यमलोक उसे पहुँचाना है ॥"
सुनकर ईश वर के बोल बड़े ।
नारद मुनि के थे कान खड़े ॥

यह नूतन समाचार पाया ।
नारदजी का जी अकुलाया ॥
'यह किसको वृत्त सुनाऊँ मैं ?
घर चित्रसेन के जाऊँ मैं ??'

मन में कुछ मन का ठान लिया ।
फिर चलने का अरमान किया ॥
"हे मोहन! मन को सन्मति दें ।
मुझको जाने की अनुमति दें ॥

"हे केशव! आप विधाता हैं ।
हर एक कला के ज्ञाता हैं ॥
तुम ही अपनी माया जानो ।
तुम ही सब निर्णय पहचानो ॥"

"तुम चित्रसेन के घर जाओ ।
उसको सब बातें बतलाओ ॥"
यह कह नारद को विदा किया ।
क्या करना है ? यह सोच लिया ॥

मुनि चित्रसेन के घर आए ।
फिर कुटिल हास में मुसकाए ॥
पर, चित्रसेन हर्षित भारी ।
की आवभगत की तैयारी ॥

नारद बोले– "सब बंद करो ।
बस, दान-पुण्य आनंद करो ॥
जीवन का मोह हटाओ भी ।
कुछ मंगल काज कराओ भी ॥

“कुछ पल बाकी हैं जीवन के ।
पूरे कर लो अरमां मन के ॥”
सुन चित्रसेन अति घबराए ।
वे कष्ट-रुदन से भर आए ॥

“मुनिवर! सब सच-सच बतलाओ ।
क्यों काल निकट है समझाओ ॥”
बोले– “सुन लो गंधर्वराज!
जीवन का अंतिम दिवस आज ॥”

“गालव का तुमने किया अहित ।
इसलिए विधाता हुए कुपित ॥
खुद माधव ने प्रण ठाना है ।
यमलोक तुम्हें भिजवाना है ॥

“सद्गति, नवजीवन पाने को ।
कुछ पर-उपकार बढ़ाने को ॥
परहित, सेवा-सत्कार करो ।
कुछ श्रेष्ठ पुण्य, उद्धार करो ॥”

यह सुनकर सेन व्यथित भारी ।
यह भूल हुई अत्याचारी ॥
बोले– “ऋषिवर! कुछ बतलाओ ।
इस दुख से बाहर ले आओ ॥

"बोलो, किसका आह्वान करूँ ?
किससे मैं क्षमा विधान करूँ ??
हे ऋषिवर! राह दिखाओ अब ।
हमको सद्‌बुद्धि सिखाओ अब ॥"

"क्या सचमुच मारा जाऊँगा ?
क्या मैं संहारा जाऊँगा ??
यदि शरणागत हो जाऊँ मैं!
यदि पैरों में पड़ जाऊँ मैं!!

"क्या केशव दया दिखाएँगे ?
क्या क्षमाशील हो पाएँगे ??"
बोले नारद– "गंधर्वराज!
ऐसी बातें मत करो आज ॥

"उनके समक्ष यदि जाओगे ।
पहले ही मारे जाओगे ॥
कोई अन्यत्र उपाय करो ।
कुछ तो हटकर पर्याय बनो ॥"

नारद मुनि ने सब समझाया ।
लेकिन उनका सिर चकराया ॥
जब बात मृत्यु की आएगी ।
कैसे सुकून पहुँचाएगी ॥

“तो तुम ही राह दिखाओ मुनि ।
मारग-दर्शन करवाओ मुनि ॥
मैं तो अबोध हूँ, कातर हूँ ।
अति व्यथित भीरु ज्यादातर हूँ ॥”

मुनि बोले– “यूँ मत घबराओ ।
धीरज विवेक सब अपनाओ ॥
जब-जब कोई घबराता है ।
अपना अनिष्ठ करवाता है ॥

“हिम्मत-साहस करके मानव ।
सबकुछ कर सकता है संभव ॥
तुमको उपाय बतलाता हूँ ।
समझो जो अब समझाता हूँ ॥

“केशव ने प्रण जब पाया था ।
उनका चेहरा कुम्हलाया था ॥
वे नहीं चाहते वधिक बनें ।
यों अत्याचारी अधिक बनें ॥

“बोले थे, उम्र बकाया है ।
पर प्रण ने उन्हें फँसाया है ॥
माधव सबके हितकारी हैं ।
प्रण से दुविधा में भारी हैं ॥

"इससे पहले कुछ हो प्रतीप ।
जाओ ब्रह्माजी के समीप ॥
बोलो, जब आयु बकाया है ।
क्यों कष्ट प्राण पर छाया है ॥

" संभव है राह दिखाएँ वे ।
संभव है सही बताएँ वे ॥"
यह सुनकर सेन हुए सहमत ।
बोले– "जय हो! मुनि की रहमत ॥

"प्रभुवर! मुझको आदेश करो ।
मुझको अब आगे जाने दो ॥"
मुनि बोले– "खुश होकर जाओ ।
निज सफल काज खुद करवाओ ॥"

मदद माँगने चल दिए, पुष्पक लेकर सेन ।
कोई भी रक्षा करे, येन–केन–प्रकरेण ॥

ब्रह्मलोक भ्रमण खंड

चल दिए सेन पुष्पक लेकर ।
भयभीत; मिलें ना कमलेश्वर ॥
जब हदस मौत का होता है ।
बलवान, श्रेष्ठ भी रोता है ॥

मन में अति संशय, भय, उफान ।
कैसे होगा अब समाधान ??
जब समय शेष हो जीवन में ।
तो हिम्मत बँधती है मन में ॥

हर ईष्ट देवता को ध्याकर ।
वे जाकर पहुँचे ब्रह्मनगर ॥
देखा, प्रभु ध्यान-मग्न भारी ।
की चीत्कार की तैयारी ॥

वे "त्राहिमाम" कह चिल्लाए ।
अज, ध्यानभंग हो जग आए ॥
वे नयन खोलकर यूँ बोले–
"हे सेन! बन रहे क्यों भोले ??

"कैसी पीड़ा में आए हो ?
तुम क्यों इतने घबराए हो ??
मुझको सब सच-सच बतलाओ ।
अब और नहीं तुम घबराओ ॥

"तुम सरस्वती के प्यारे हो ।
मेरी आँखों के तारे हो ॥
तुम ईश्वर का गुणगान करो ।
सच-गलती सभी बखान करो ॥

" संभव है पीड़ा हर पाऊँ ।
कुछ मदद तुम्हारी कर पाऊँ ॥"
यह सुनकर सेन दुखित भारी ।
"अब जान बचा लो त्रिपुरारी ॥"

ब्रह्माजी पूछन लगे, कहाँ हुआ व्यवधान ।
सेन अधिक संताप में, करने लगे बखान ॥

" कहाँ दोष मेरा है स्वामी ।
स्वयं देख लें अंतरयामी ॥
हम गंधर्व कहाँ लड़ते हैं!
ऋषियों के पैरों पड़ते हैं ॥

“फिर भी सच-सच बतलाते हैं ।
मुख्य बात पर हम आते हैं ॥
कल जब पहुँचे इंद्रलोक में ।
देवराज थे अधिक शोक में ॥

“पहले उनको धीर बँधाया ।
फिर उनके मन को बहलाया ॥
तभी पुरंदर ने बतलाया ।
रात्रि-भोज हमने बनवाया ॥

“आज तुम्हें रुक जाना होगा ।
संग-साथ में खाना होगा ॥
यहाँ मधुर संगीत करेंगे ।
हम सबके रंग खूब जमेंगे ॥

“देवराज ने जिद ठानी थी ।
मेरी बात नहीं मानी थी ॥
मैंने उनका कहना माना ।
वहाँ पड़ा मुझको रुक जाना ॥

“इंद्रधाम था सज्जित सारा ।
किसको नहीं लगेगा प्यारा ??
अद्‌भुत आभा दमक रही थी ।
खूब चाँदनी चमक रही थी ॥

"सिर पर ही थे श्वेत सितारे ।
जगमग चमक रहे थे सारे ॥
श्वेत कपोत कुलक भरते थे ।
श्वेत मयूर नृत्य करते थे ॥

"श्वेतादिक अंबर था सारा ।
श्वेत-श्वेत सब ओर नज़ारा॥
श्वेत हंस जैसे वाहन थे ।
श्वेत मेघ के सब आसन थे ॥

"इंद्र श्वेत वसनों में आए ।
सभी दृश्य मुझको अति भाए ॥
श्वेत सभी पकवान पकाए ।
श्वेत बर्तनों में मँगवाए ॥

फिर सबने ही भोजन पाया ।
चावपूर्ण सबने सब खाया ॥
फिर विनोद की घड़ी सुहाई ।
रात रंगीली पड़ी दिखाई ॥

रात्रि-सभा का योग था, होना था संगीत ।
देवराज कहने लगे, आओ-बैठो मीत ॥

देवराज के साथ में, था असीम आनंद ।
सुर, लय, गायन, नृत्य सब, लगते थे निष्पंद ॥

"सभा शुरू थी, सब थे सुखमय ।
मोहक नृत्य और सुर अक्षय ॥
पूरा इंद्र-लोक हर्षाया ।
ब्रह्मकाल इतने में आया ॥

"देवराज से अनुमति माँगी ।
मुझको अब जाने दो साथी ॥
उनको यह प्रस्ताव सुहाया ।
हँसी–खुशी मुझको भिजवाया ॥

"चलते समय पान खिलवाया ।
मुझको बेहद पान सुहाया ॥
निकल पड़ा मैं लेकर पुष्पक ।
नहीं कहीं देनी थी दस्तक ॥

"सीधे मुझको घर जाना था ।
कुछ आराम वहीं पाना था ॥
काया पर थकान भारी थी ।
केवल एक पीक मारी थी ॥

"नीचे मगर देख नहिं पाया ।
इस अनरथ ने मुझे फँसाया ॥
मुझे भूल का भान नहीं था ।
क्या गलती थी, ज्ञान नहीं था ॥

"नारद जी मेरे घर आए ।
मुझे पूर्ण वृत्तांत सुनाए ॥
अर्घ्य दिए जब गालव ध्याकर ।
पीक गिरी अँजुरी में जाकर ॥

"शपथ मदन ने ऐसी खाई ।
यही भूल प्राणों पर आई ॥
समय बचा है आठ प्रहर का ।
जीवन मेरा है तमहर-सा ॥

"कौन हमारे प्राण बचाए ।
इसीलिए शरणागत आए ॥
'त्राहिमाम' प्रभु! जान बचा लो ।
जो चाहो, मुझसे करवा लो ॥"

यह सुनकर ब्रह्मा घबराए ।
कौन मदन के आगे जाए ??
"मेरी कुछ औकात नहीं है ।
मेरे वश की बात नहीं है ॥

" यही मामला बड़ा जटिल है ।
इसका समाधान मुश्किल है ॥
माना गलती नहीं तुम्हारी ।
लेकिन प्रण ले चुके मुरारी ॥

"सुन लो तुमको बात बताऊँ ।
सेन तुम्हें मारग दिखलाऊँ ॥
मोहन हैं विष्णू अवतारी ।
वही बन सकें ढाल तुम्हारी ॥

"पास उन्हीं के जाना होगा ।
सब सच-सच बतलाना होगा ॥
समाधान वे कर पाएँगे ।
बेहतर रस्ता बतलाएँगे ॥"

चित्रसेन अब क्या ही बोले ।
अपनी भूल कहाँ तक तोले ॥
उसकी बढ़ती गयी निराशा ।
खत्म हो रही सारी आशा ॥

सुनकर संकट प्राण पर, ब्रह्मा दिखे उदास ।
मैं नत हूँ, तुम जाइए, नारायण के पास ॥

बैकुंठ भ्रमण खंड

ब्रह्मा जी की देख सरलता ।
सेन दिखाने लगे चपलता ॥
बोले– “प्रभुवर! आशिष दीजे ।
सारे काम सफल अब कीजे ॥”

ब्रह्मा जी ने हाथ बढ़ाया ।
पूर्ण नेह से विदा कराया ॥
चले सेन तब शीश नवाकर ।
पहुँचे क्षीर-सिंधु में जाकर ॥

बीच सिंधु लेटे त्रिपुरारी ।
शैया शेषनाग की प्यारी ॥
शेषनाग का नाम अनंता ।
ये हैं नागराज भगवंता ॥

राजपाठ को छोड़ दिया है ।
प्रभु-सेवा का भार लिया है ॥
निज काया से निर्मित शैया ।
उस पर हैं भव पार लगैया ॥

सौ सहस्र फण नागराज के ।
सभी समर्पित छत्र काज के ॥
वहीं विराजित लक्ष्मी माता ।
धन की देवी सद्‌फलदाता ॥

प्रभु की सेवा में संकल्पित ।
माँ का पूरा जीवन अर्पित ॥
पद्मनाभ दुनिया के पालक ।
सारी सृष्टी के संचालक ॥

ज्यों ही पहुँचे सेन समंथा ।
बैठ गए प्रभु नीति-नियंता ॥
बोले सेन– "क्षमा! गिरधारी ।
भूल हुई है हमसे भारी ॥

"तुम हो ईश्वर, हम हैं पापी ।
भीख माँगता है संतापी ॥
शरणागत को क्षमा करें प्रभु!
मेरे सारे कष्ट हरें प्रभु!!

"ऐसी भूलें नहीं करूँगा ।
फूँक-फूँक कर पैर धरूँगा ॥
मुझको अबकी बार बचा लें ।
चाहें तो संघर्ष बढ़ा दें ॥"

इतना सुनकर विष्णु ने, कहा– "सुनो प्रिय सेन।
सारी व्यथा बताइए, मत बनिए बेचैन ॥"

हाथ जोड़कर सेन ने, सुना दिया वृत्तांत ।
गरुणध्वज भी कह गए, यह है भूल नितांत ॥

चित्रसेन ने व्यथा बताई ।
प्रभु भी चिंतित पड़े दिखाई ॥
बोले– "गलती नहीं तुम्हारी ।
पर तुम मानो बात हमारी ॥

"भले कृष्ण मेरे अवतारी ।
किंतु कला है उनमें सारी ॥
कृष्ण अभी हैं मृत्यु-लोक में ।
पर तुम रहिए नहीं शोक में ॥

"केशव हैं मेरी ही छाया।
फैलाई है अतिशय माया॥
पर उसमें मेरी लाचारी।
नहीं हटाने के अधिकारी॥

"भले नहीं कुछ मैं कर पाऊँ ।
लेकिन तुमको राह बताऊँ ॥
मोहन शिव के बड़े उपासक ।
शिव सृष्टि के श्रेष्ठ विधायक ॥

“महादेव को बात बताओ ।
उनसे कष्टों को मिटवाओ ॥
उनकी बात न केशव टालें ।
वे समझें मोहन की चालें ॥

“उनके पास अभी तुम जाओ ।
समाधान शिव से करवाओ ॥”
चित्रसेन सुनकर नत-मस्तक ।
देनी अब कैलाश पे दस्तक ॥

चित्रसेन बैकुंठ से, करके चले प्रणाम ।
निकल पड़े कैलाश को, लेकर शिव का नाम ॥

कैलाश भ्रमण खंड

निकल पड़े वे तीव्र वेग से ।
दूर हुए हर महामेघ से ॥
सोच रहे ‘अब कम अवधी है ।
आशा केवल एक बची है ॥

‘महादेव कुछ कर सकते हैं ।
वरना तो हम मर सकते हैं ॥’
सोच–सोच में वे घबराकर ।
पहुँच गए पर्वत पर जाकर ॥

वहाँ मात गंगा को पाया ।
चित्रसेन ने शीश नवाया ॥
आशिष पाकर आगे आए ।
वहाँ सेन नंदी को पाए ॥

इक-दूजे को प्रणीपात कर ।
वे आगे आए मुसकाकर ॥
चंद्र देव को शीश झुकाया ।
देख वासुकी को भी ध्याया ॥

ध्यानलीन प्रभु महाकाल थे ।
किंतु सेन के बहु– सवाल थे ॥
जैसे ही वे पहुँचे आगे ।
रुद्र महाप्रभु ध्यान से जागे ॥

बोले– "आओ! सेन पधारो ।
तुम अपनी चिंता को मारो ॥
जो नियती ने रास रचा है ।
उसकी कोई खास वजह है ॥

"मोहन सबके तारन-हारे ।
सब देवों में सबसे प्यारे ॥
उनकी कथनी पर मत जाओ ।
कर्म पुण्यमय करते जाओ ॥

"उनसे माया तृष्णा हारी ।
वे मायापति स्वयं बिहारी ॥
जग-पालक वे निर्विकार हैं ।
उनके कर्मक, दिव्य सार हैं ॥

"वे सृष्टि के नीति–नियंता ।
आदि-पुरुष ईश्वर भगवंता ॥
जग संचालन के अधिनायक ।
सभी देव उनके गुण-गायक ॥

"उनके प्रति अनिष्ठ मत लाओ ।
उनको सादर शीश झुकाओ ॥
वे सबकुछ अच्छा कर देंगे ।
तेरी हर पीड़ा हर लेंगे ॥"

सुनकर सेन बहुत अकुलाए ।
आँखों में आँसू भर लाए ॥
"अनुनय सुन लो प्रभु हमारी ।
मेरे ऊपर विपदा भारी ॥

"हे गिरिजापति! जान बचा दो ।
या फिर सीधी राह दिखा दो ॥
प्रभु! प्राणों पर संकट छाए ।
ब्रह्मा-विष्णू बचा न पाए ॥

"शरणागत हूँ नाथ तुम्हारी ।
यह अंतिम उम्मीद हमारी ॥
ईश्वर बख्शो जान हमारी ।
आजीवन होंगे आभारी ॥

"आप आदि हैं, अविरामी हैं ।
सभी शक्तियों के स्वामी हैं ॥
सब देवों में श्रेष्ठ आप हैं ।
सृष्टि से भी ज्येष्ठ आप हैं ॥

"यजुर्वेद के शांतिदूत हैं ।
पाप निवारक महाभूत हैं ॥
अर्थ आपके शुभकारी हैं ।
आप विश व के त्रिपुरारी हैं ॥

"मैंने सब सद्कर्म किए हैं ।
परहित में हम सदा जिए हैं ॥
सद्कर्मों का फल दे दीजे ।
ईश्वर मेरी रक्षा कीजे ॥"

सुन करके मीठे वचन, हो गए रुद्र प्रसन्न ।
समाधान दूँगा तुम्हें, अब चिंता संपन्न ॥

तब शंभू ने बात बताई–
"समाधान सुन लो चितलाई ॥
मोहन का मन बड़ा सरल है ।
पर उनका संकल्प अटल है ॥

"फिर भी तुमको राह दिखाऊँ ।
बचने का उपाय समझाऊँ ॥
जो उनके प्रति नत रहते हैं ।
जो विनम्र हो सब सहते हैं ॥

"जिनका है व्यवहार सुकोमल ।
उनसे खुश रहते हैं प्रतिपल ॥
सदाचार सबको भाता है ।
कौन विनत को मरवाता है ??

"जब माधव समक्ष आ जाएँ ।
उनसे आप विनत हो जाएँ ॥
वे तुमसे खुश हो जाएँगे ।
बिना दंड दे अपनाएँगे ॥

महादेव के वचन सुन, हुआ नहीं संतोष ।
मन में चलता ही रहा, भय के प्रति उद्घोष ॥

"चित्रसेन अब तुम घर जाओ ।
केवल यही मंत्र अपनाओ ॥"
जारी था शिव का समझाना ।
बता रहे प्रभु! विविध विधाना ॥

"इतना करना चल जाएगा ।
समय कष्टप्रद टल जाएगा ॥
फिर भी हिम्मत को मत खोना ।
रत्ती-रत्ती इसे सँजोना ॥

"यह हिम्मत ही ज्ञान बढ़ाए ।
यह विवेक-बुद्धी विकसाए ॥
हिम्मत ही उत्साह जगाए ।
अँधियारे में राह दिखाए ॥

"जिसने भी हिम्मत त्यागी है ।
वह तो कष्टों का भागी है ॥
जो भी हिम्मत से लड़ते हैं ।
मुश्किल में आगे बढ़ते हैं ॥

"हिम्मत में धीरज मिल जाए ।
तो समझो जीवन खिल जाए ॥
यह सुनकर कुछ हिम्मत आई ।
चित्रसेन दृढ़ दिए दिखाई ॥

बोले– "प्रभुवर! मैं जाता हूँ ।
हिम्मत से नत हो जाता हूँ ॥
लेकिन यह आशीष निभाना ।
हो जाए मेरा बच जाना ॥"

यह सुनकर शंभू मुसकाए ।
कुछ विचार मन में भी आए ॥
लेकिन शिव ने यही बखाना ।
विनय और हिम्मत अपनाना ॥

फिर जो होगा वही करेंगे ।
मोहन बिलकुल सही करेंगे ॥
कला-कुंभ में वे आए हैं ।
सारी कला संग लाए हैं ॥

“कौन उन्हें समझा सकता है ?
किस विधि उन्हें बता सकता है ??
नीति-नियंता, वे स्वामी हैं ।
वे खुद ही अंतरयामी हैं ॥”

“जीवनदाता कृष्ण हैं, श्री गिरिधर भगवान।
अच्छे तेरे कर्म हैं, अच्छा बने विधान ॥”

बहुविधि जब शिव ने समझाया ।
चित्रसेन को साहस आया ॥
वहीं सेन ने शीश नवाया ।
आशिर्वचन रुद्र का पाया ॥

चले सेन लेकर पुष्पक-रथ ।
शिव से समझ लिया जीवन-पथ ॥
फिर भी कुछ संशय बाकी था ।
जीवन अब भी एकाकी था ॥

इंद्र-लोक भ्रमण खंड

लौटे तीनों लोक से, परेशान गंधर्व ।
बेचैनी से ओतप्रोत, टूट गया हर गर्व ॥

घर पहुँचे पर चैन न आया ।
मित्र इंद्र का ध्यान लगाया ॥
जाकर पहुँचे इंद्रलोक में ।
देवराज फिर मिले शोक में ॥

माधव के प्रण से शंकित थे ।
इंद्रदेव अति आतंकित थे ॥
ज्यों ही निकट सेन को पाए ।
झट ही उनसे मिलने आए ॥

पूछा– "क्या गलती कर बैठे ?
क्यों माधव तुमसे यों ऐंठे ??
मुझको पूरी बात बताओ ।
सेन गले से तुम लग जाओ ॥"

चित्रसेन ने गले लगाया ।
पूरा कथा-सार बतलाया ॥
“कर लो रक्षा की तैयारी ।
कुछ तो कर दो मदद हमारी ॥”

देवराज सुनकर घबराए ।
“कैसे मदद कराई जाए ??
उनसे भिड़ना बड़ा कठिन है ।
उन्हें हराना नामुमकिन है ॥

“वैसे तुम बिलकुल मेरे हो ।
पर ढेरों संकट घेरे हो ॥
मैं मदद नहीं कर पाऊँगा ।
ना विपदा नई बुलाऊँगा ॥

“मैं उनका नहीं दुलारा हूँ ।
ना ही मैं उनका प्यारा हूँ ॥
अब सेन यहाँ से जाओ तुम ।
औरों से मदद कराओ तुम ॥

“यदि अधिक देर रुक जाओगे ।
तुम मुझको भी मरवाओगे ॥
वे सेना ले आ जाएँगे ।
मुझको भी मार भगाएँगे ॥”

चित्रसेन अब सोच रहे हैं ।
'क्यों हम इनके मित्र रहे हैं ॥
एक मित्र जो कर्ण रहा था ।
वह कल्मष की शरण रहा था ॥

'पर ये धरम निभा ना पाए ।
नहीं साथ में मेरे आए ॥
खिन्न-खिन्न यह कैसी यारी ।
दो चेहरों की पापाचारी ॥

'इंद्रलोक की सत्ता प्यारी ।
लेकिन कल्मष करते भारी ॥'
यही सोच, वे लौटे आए ।
अतिशय चिंतित, थे घबराए ॥

देवराज की बात सुन, हुआ उन्हें संताप ।
निकल पड़े उस धाम से, करते हुए विलाप ॥

आशा में पहुँचे तभी, सखा वरुण के धाम ।
वरुण देव कहने लगे, हम भी हैं नाकाम ॥

जिनसे-जिनसे हाथ पसारे ।
सभी हो गए एक किनारे ॥
जहाँ मित्रवत पहुँचे जाकर ।
भगा दिया सबने घबराकर ॥

जब-जब बुरा वक्त आता है ।
सीख अलौकिक दे जाता है ॥
बुरे वक्त से मत घबराना ।
बुरा वक्त बेहतर विधि नाना ॥

यही सही पहचान कराता ।
निज-गैरों में भेद बनाता ॥
बुरा वक्त नहिं जिनका आता ।
सही सीख वह कभी न पाता ॥

जब भी बुरा वक्त आ जाए ।
मानव थोड़ी धीर बनाए ॥
कुछ दिन में ये भी जाते हैं ।
फिर बेहतर दिन आ जाते हैं ॥

तभी याद सेना की आई ।
एक किरण पड़ गई दिखाई ॥
अपना सेनापति बुलवाया ।
सारा वृत्त उन्हें बतलाया ॥

आगे की रणनीति बताई ।
नहीं करेंगे प्रथम लड़ाई ॥
सदा अहिंसा अपनाएँगे ।
नहीं समर में हम जाएँगे ॥

व्यथा खंड

घर पहुँचे, पर चैन न आया ।
नारद मुनि का ध्यान लगाया ॥
बिना कहीं भी देर लगाए ।
नारद दौड़े-दौड़े आए ॥

वही एक देवों के खबरी ।
हर अद्यतन बताते सबकी ॥
बहुत तेज़ वे पत्रकार हैं ।
'नारायण' कह खुशगवार हैं ॥

समाचार सच्चा लाएँगे ।
सूत्र नहीं कुछ चिपकाएँगे ॥
किंतु आज अगणित ज़रिया हैं ।
फिर भी खबर महा-घटिया हैं ॥

खबरों में तो ढंग नहीं है ।
नारद का पासंग नहीं है ॥
सुनो– दौड़कर नारद आए ।
कुछ उतावले, कुछ घबराए ॥

पूछा– “कैसा हालचाल है ?
ब्रह्माजी का क्या कमाल है ??”
तभी सेन ने बात सुनाई–
“देख चुके सबकी प्रभुताई ॥

“ब्रह्मा-विष्णु निस्सहाय थे ।
भोले एकदम कृष्णकाय थे ॥
पर शिव जी ने यह बतलाया ।
सबकुछ है मोहन की माया ॥

“नत होने की आदत डालो ।
हिम्मत से हर काम निकालो ॥
यह सब शंभू ने समझाया ।
लेकिन मेरा मन भरमाया ॥

“मुनिवर आप उपाय बताओ ।
मेरी नैया पार लगाओ ॥
चित्रसेन की बातें सुनकर ।
अचरज में थे नारद मुनिवर ॥

“नत हो कैसे बच पाएँगे ।
जब माधव समक्ष आएँगे ॥
यह पीड़ा बेहद उत्कट है ।
तेरे प्राणों पर संकट है ॥

"उधर, रथी रथ सजा रहे हैं ।
कृष्ण मंत्रणा बना रहे हैं ॥
समय नहीं अब और शेष है ।
यही समय है, अति विशेष है ॥

"नहीं रहो तुम भाग्य भरोसे ।
खुद ही तुम जाओगे कोसे ॥
सद्गति जब-जब भय खाती है ।
हिम्मत बैठी रह जाती है ॥

"केवल कर्म बचा सकता है ।
नवजीवन को ला सकता है ॥
चित्रसेन मत कर्म डुबाओ ।
कुछ तो सोचो, आगे आओ ॥

"कर्मठ सदा उचित फल पाते ।
कर्महीन बैठे रह जाते ॥
कर्मशील यदि डट जाते हैं ।
पर्वत पीछे हट जाते हैं ॥

"कर्मठ की है उच्च महत्ता ।
कर्मठ बदल सके हर सत्ता ॥
करके कर्म विनत बन जाना ।
कर्मठ होकर हिम्मत लाना ॥

"कर्महीन यदि रह जाओगे ।
नत हिम्मत से क्या पाओगे ॥
चलो, कर्म कुछ करते जाओ ।
आशा के कुछ फूल खिलाओ ॥"

नारद जी के वचन सुन, मन में जागी आस ।
लेकिन कैसे क्या करें, होने लगे हताश ॥

बोले सेन– "सुनो प्रभु नारद ।
आप ज्ञान-विज्ञान विशारद ॥
बहु-विधि बहु विषयों के ज्ञाता ।
आप सभी देवों के ध्याता ॥

"आप कला में पारंगत हैं ।
कृष्ण कृपा है, सुख-परिणत हैं ॥
कोई आप उपाय बताओ ।
मेरा जीवन सफल बनाओ ॥"

स्तुति सुनकर सब खुश होते ।
हँस जाते हैं रोते-रोते ॥
यही एक ऐसी लकड़ी है ।
जो कुछ भी करवा सकती है ॥

यह सुनकर नारद मुसकाए ।
सुन बखान बेहद हर्षाए ॥
बोले– “मैं कुछ बतलाता हूँ ।
कुछ क्षण में वापस आता हूँ ॥

“तुम मेरा आसरा लगाना ।
महल छोड़कर कहीं न जाना ॥”
तुरत सेन ने हामी भर दी ।
अर्द्ध प्रहर की स्वीकृति कर दी ॥

नारद जी हर्षित हुए, सुनकर निज गुणगान ।
जीवन का हित साधने, हो गए अंतर्ध्यान ।

इधर, सांझ ढलने को आई ।
गालव चिंतित पड़े दिखाई ॥
कल तक आठों प्रहर दिए हैं ।
केशव ने क्या यत्न किए हैं ??

कैसे यह सब पता लगाऊँ ?
या फिर भोर द्वारिका जाऊँ ॥
चित्रसेन यह अति जाहिल है ।
कल का समय बहुत मुश्किल है ॥

कल मेरा वरदान समय है ।
कल मेरा इच्छित फल तय है ॥
पर यदि मैंने क्रोध दिखाया ।
सब खो दूँगा जो भी पाया ॥

मन में क्रोध बहुत भारी है ।
पाप-पुण्य की तैयारी है ॥
गालव चिंतित सोच रहे हैं ।
खुद अपने नख नोच रहे हैं ॥

क्या मुझसे सब अर्थ हुआ है ?
या फिर घोर अनर्थ हुआ है ??
उससे तो कुछ भूल हुई है ।
मुझसे चूक समूल हुई है ॥

उद्विग्न, खिन्न वे सोच-सोच ।
हो गया मंद अब आक्रोश ॥
कुछ नम्र-भाव मन में जागे ।
हो गए शील में वे आगे ॥

जब पीक याद आ जाती थी ।
उनकी ज्वाला भड़काती थी ॥
पर उधर, सेन भयभीत दिखे ।
हर फन उनके विपरीत दिखे ॥

वे आज सुबह से परेशान ।
हो सका नहीं अब तक निदान ॥
नारद की राह निहारे हैं ।
द्वारे पर दृष्टि पसारे हैं ॥

कब किस पर अत्याचार किए ।
कब किस पर गलत प्रहार किए ॥
हर घटना आती-जाती है ।
सामने दृश्य दिखलाती है ॥

यह कैसा दण्ड दिखाया है ?
विधना ने खेल रचाया है ॥
जब मैं सबके हित में आया ।
सौभाग्य-सुयश सबसे पाया ॥

ताड़ना-ताप क्यों पाया है ?
क्यों मुझ पर संकट छाया है ??
क्यों झंझा, घोर-झकोर यहाँ ?
क्यों विपदा तोड़-मरोड़ यहाँ ??

क्यों मन की टूट कगार चली ?
क्यों उमड़-घुमड़ पतवार चली ??
कोई जीवन पर्याय बनो ।
नारद जी तुम्हीं सहाय ॥

विकराल व्यथा बन आई है ।
कालिमा सूर्य पर छाई है ॥
भय से कंपित, भय में विलीन ।
इस समय सेन हैं तर्कहीन ॥

इतने में नारद प्रकट हुए ।
झट चित्रसेन ने चरण छुए ॥
प्रभुवर! उपाय क्या लाए हो ?
कैसी रणनीति बनाए हो ??

यह सुन नारद ने बतलाया–
"हे वत्स! अधिक क्यों घबराया ??
मेरी बातों पर ध्यान करो ।
जो कहूँ वही संधान करो ॥"

फिर नारद उन्हें बिठाते हैं ।
वे भाँति- भाँति समझाते हैं ॥
अपने गुण-कर्म बखान किए ।
मुनि ने निज महिमा गान किए ॥

बोले- "सब ठीक कराता हूँ ।
सुन लो जो तुम्हें सुनाता हूँ ॥
सब सही तरह करना होगा ।
अब तुम्हें डरना होगा ॥"

कुछ बातें गूढ़ बताने को ।
बैठे नारद समझाने को ॥
देकर उदाहरण समझाया ।
तब चित्रसेन को सुख आया ॥

○○○

नारद–चित्रसेन संवाद

"कल व्यास-पूर्णिमा प्यारी है ।
उसकी महिमा अति न्यारी है ॥
इस दिन की अनुपम गाथा है ।
पावन-पुनीत फलदाता है ॥

"नर ब्रह्मकाल में ध्यान करें ।
बहते जल में अस्नान करें ॥
वे शुद्धि-बुद्धि उपवास करें ।
ईश्वर का अभिनव जाप करें ॥

इस दिन का उत्तम दान हुआ ।
इसका उत्कृष्ट बखान हुआ ॥
गुरुओं का मान निभाते हैं ।
पूजा-अर्चन करवाते हैं ॥

नारद बोले– "यह काम करो ।
मेरे संग यमुना पार चलो ॥"
यह कह यमुना के तीर चले ।
बोले– "ये तट पवित्र, उजले ॥

"इक बात यही बतलानी है ।
यह युक्ति तुम्हें अपनानी है ॥
इस तट पर तुमको आना है ।
लघु स्वांग तुम्हें फैलाना है ॥

"कोई पूछे तो चुप रहना ।
आश्वासन पर ही कुछ कहना ॥
आगे की सब मंत्रणा समझ ।
वे मान गए हर बात सहज ॥"

सब कुछ समझाकर विरत हुए ।
इक अन्य सोच में निरत हुए ॥
थोड़ा विचलित था उनका मन ।
पहुँचे अर्जुन के राजभवन ॥

सामने वहाँ सुभदा पाईं ।
नारद को देखा हर्षाईं ॥
सुभदा ने उन्हें प्रणाम किया ।
आसन देकर सम्मान दिया ॥

बोलीं– "ऋषिवर! अब पहचाना ।
वर्षों के बाद हुआ आना ॥
क्या हाल खबर कुछ लाए हैं ।
या सिर्फ विचरने आए हैं ??"

यह सुनकर नारद मुसकाए ।
सब समाचार लेने आए ॥
"हम यही बताने आए हैं ।
तेरे शुभ-दिन खिसियाए हैं ॥

"ऋषियों ने महिमा गाई है ।
कल पूर्ण चन्द्र सुखदाई है ॥
कल देव-दिवस आषाढ़ी है ।
इस दिन का पुण्य प्रतापी है ॥

"ऋषिवर! यह कैसी पैठ भई ।"
नारद सम सुभदा बैठ गई ॥
"कल ब्रह्मकाल अस्नान करो ।
मोहन, शिव, गुरु का ध्यान धरो ॥

"कुछ समाधान बतलाओ प्रभु!
कुछ मारग हमें दिखाओ प्रभु!!
क्या यज्ञ आदि करवाएँ हम ?
कैसे अच्छे दिन लाएँ हम ??"

तब नारद जी को भान हुआ ।
यह तीर सही संधान हुआ ॥
बोले– "सुभदा मत घबराओ ।

कल यमुना के तट पर जाओ ॥
"प्रभु की अनंत प्रभुताई है ।
कल दान-पुण्य फलदाई है ॥
यदि पीड़ित कोई मिल जाए ।
तो जीवन तेरा खिल जाए ॥

"कर दोगी यदि तुम समाधान ।
बन जाएगा तेरा विधान ॥
कोई भी रोक न पाएगा ।
हर शुभ फल घर में आएगा ॥

"पर ये फल तब ही पाओगी ।
जब कर्म नहीं बतलाओगी ॥
जो दान-पुण्य सेवा करना ।
सारा कुछ मन में ही रखना ॥"

ये बातें सुभदा समझ गई ।
उसकी हर गुत्थी सुलझ गई ॥
नारद जी का आभार किया ।
अपना बलिष्ठ आधार किया ॥

इतना कहकर चल दिए, नारद अपने धाम ।
सुभदा भी करने लगी, जाते उन्हें प्रणाम ॥

अभयदान खंड

यमुना तट की तरुणाई है ।
तरुओं की छाई है ॥
अंबर में चंदा चमक रही ।
धरनी पर आभा दमक रही ॥

कल-कल निर्मल जल बहता है ।
बढ़ते रहने को कहता है ॥
कुदरत की जीवन-शैली है ।
चुप्पी कोसों तक फैली है ॥

सब सुमन, नयन को बंद किए ।
हँसते, लगते सानंद जिए ॥
वे भीनी खुशबू छोड़ रहे ।
बाकी मन से मन जोड़ रहे ॥

पक्षी वृक्षों पर सुप्तासन ।
पशुओं का भी सोया था मन ॥
कुदरत ने ली जम्हाई थी ।
हर ओर शान्ति-सी छाई थी ॥

ऐसे में कोई आया था ।
कुररी ने शोर मचाया था ॥
कुदरत ने सब कुछ जान लिया ।
क्यों कर कोई प्रतिकार किया ॥

पर समय सरकता है तत्पर ।
कुछ पल में चुप्पी गई पसर ॥
यह रात्रि सेन पर भारी थी ।
बिन सोए हुए गुज़ारी थी ॥

हर चिंता उनकी बाकी थी ।
हर इन्द्री उनकी जागी थी ॥
मन में बस यही दिलासा थी ।
कुछ आशा थी, अभिलाषा थी ॥

सद्कर्म अगर कर पाएँगे ।
शायद जीवन पा जाएँगे ॥
मन में वे बहुत सवाल लिए ।
गहरी पीड़ा में आज जिए ॥

वे सोच-सोचकर परेशान ।
कैसे कृत करता है विधान ॥
जिसने न कभी खलु काम किया ।
कैसा उसको परिणाम दिया!!

इक भूल जान पर भारी है ।
मति मारी गई हमारी है ॥
विधना को कौन बताएगा ?
जो होगा देखा जाएगा ॥

अर्द्धरात्रि बीती तभी, आया ब्रह्म-मुहूर्त ।
आशा पाकर जागती, दिखी स्वतः स्फूर्त ॥

कुक्कुट की बांग सुनाई दी ।
इक आहट भी तो आई थी ॥
नभ गूँजा मोरों के स्वर से ।
खिल उठी लालिमा अंबर से ॥

पर बाकी अभी अँधेरा था ।
तरुओं का झुरमुट घेरा था ॥
प्रतिकृति कुछ वहाँ दिखाई दी ।
कुछ लोगों की परछाई थी ॥

शायद रथगीर पुराना था ।
रस्ता जाना-पहचाना था ॥
सुभदा ही तट पर आई थीं ।
कुछ अनुचरियों को लाई थीं ॥

सखियों ने तीर संभाला ।
नज़रों ने खूब खंगाला था ॥
यमुना को वहाँ प्रणाम किया ।
तब ही आगे का काम किया ॥

सुभदा ने केशव ध्यान किया ।
पूजा-अर्चन गुणगान किया ॥
यमुना जी में अस्नान किया ।
तब अर्घ्य दिया, सम्मान दिया ॥

यह घड़ी बहुत अविकारी थी ।
घर जाने की तैयारी थी ॥
सोचा था पुष्कर जाऊँगी ।
कुछ दान-पुण्य करवाऊँगी ॥

जब वे अपने रथ ओर मुड़ीं ।
वैसे पीड़ामय नाद सुनी ॥
"ये रुदन कहाँ से आया है ?
ये कष्ट कहाँ मंडराया है ??

"किसको भारी संताप हुआ ?"
इतने में उच्च विलाप हुआ ॥
द्वारिकाधीश का शासन है ।
फिर कौन यहाँ कष्टागन है ??"

रुक गई सुभद्रा तब तत्पर ।
कुछ डोल गया उनका अंतर ॥
तब उनकी स्मृति में आया ।
नारद जी ने था बतलाया ॥

"है व्यास-पूर्णिमा अति उत्तम ।
कर लो कुछ दान-पुण्य, उद्यम ॥
दुखियों के कष्ट मिटाने हैं ।
कुछ पावन पुण्य कमाने हैं ॥

"कुदरत का कृत्य निराला है ।
अवसर तुरंत दे डाला है ॥
माया का विस्मय भारी है ।
यह घड़ी सुमंगलकारी है ॥

'क्यों नाहक देर लगाऊँ मैं ।
क्यों वक्त और विसराऊँ मैं ॥
मुझको शक्ति दो जगन्नाथ ।
उपकार करूँ मैं लगे हाथ ॥'

आवाज जहाँ से आई थी ।
झुरमुट से ध्वनि सुनाई थी ॥
जिस ओर रुदन की ध्वनि बढ़े ।
उस ओर सभी डग निकल पड़े ॥

सुभदा बोली– “तुम कौन यथा ?
कह दो मुझसे हर एक व्यथा ॥”
यह सुन विलाप हो गया तेज ।
ज्यों हो पीड़ा सनसनीखेज ॥

वह कुछ भी नहीं बताता था ।
रोना बढ़ता ही जाता था ॥
“क्यों ऐसे रोते जाते हो ?
क्यों पीड़ा नहीं बताते हो ??

“ऐसा क्या है सारे जग में ?
जो रख न सकूँ तेरे पग में ॥
जो माँगो, देकर जाऊँगी ।
या दाना नहीं उठाऊँगी ॥

“धरती, धन, धाम, कनक माँगो ।
चाहो तो मुझको अजमा लो ॥”
सुभदा ने जब ये जोर दिया ।
तो उसने भी अनुरोध किया ॥

“देवी! तुम कष्ट निवारक हो ।
तुम ही पीड़ा संहारक हो ॥
पीड़ा मैं तभी बताऊँगा ।
जब वचन आपसे पाऊँगा ॥

"पर क्या तुम ऐसा चाहोगी ?
मेरी पीड़ा हर पाओगी ??
जब बात नाक पर आती है ।
नारी दुर्गा बन जाती है ॥

"ईश्वर की जैसी इच्छा है ।
किंचित अब यही परिक्षा है ॥
सौगंध प्रभू की खाती हूँ ।
मैं तुमको वचन दिलाती हूँ ॥

"बोलो श्रीमन क्या माँग रहे ?
कैसे क्या तुमने कष्ट सहे ??
पा चुके वचन सब बतला दो ।
आओ समक्ष, मुख दिखला दो ॥"

तब चित्रसेन बाहर आए ।
नत-विनत और कुछ घबराए ॥
"मुझको कोई धन, धान्य न दो ।
कुछ और अधिक अरमान न दो ॥"

बोले– "देवी! दो अभयदान ।
खतरे में हैं मेरे पिरान ॥
बोले– "मैं हूँ गंधर्वराज ।
पूरे कीजे निर्विघ्न काज ॥"

सुभदा बोलीं– “तो डरना क्या ?
जब पारथ हैं तो करना क्या ??
जो भी लड़ने को आएँगे,
वे खुद ही प्राण बचाएँगे ॥”

यह सुना, सेन ने बात कही ।
“केवल सच इतनी बात नहीं ॥
माधव ने ये प्रण ठाना है ।
कि मुझको मार गिराना है ॥

“अब अपना वचन निभाओ तुम ।
संकट से मुझे बचाओ तुम ॥
अर्जुन के लिए अनागत हूँ ।
देवी! तेरा शरणागत हूँ ॥”

सेन मदन के शत्रु हैं, सुनकर सुभदा मौन ।
अब तो खुद विचलित हुईं, इन्हें बचाए कौन ??

सुभदा का असमंजस जारी ।
‘लगता भूल हुई थी भारी ॥
अब कैसे क्या हो पाएगा ?
संभव है मारा जाएगा ॥

‘कैसे वचन निभाऊँगी मैं ?
इसको कहाँ छिपाऊँगी मैं ??”
पर विवेक ने साहस पाया ।
जाएगा यह वचन निभाया ॥

‘जो भी मस्तक में आया है ।
सबकुछ ईश्वर की माया है ॥
इसको घर पर ले जाऊँगी ।
सब अर्जुन को बतलाऊँगी ॥’

कहे सुभद्रा सेन से, चलिए मेरे साथ ।
मैं तो रक्षा करूँगी, बाकी जानें नाथ ॥

लिए सुभद्रा सेन को, आईं अपने धाम ।
देखा अर्जुन ने उन्हें, करने लगे प्रणाम ॥

वे अपना वचन निभाने को ।
दुखिया के कष्ट मिटाने को ॥
घर चित्रसेन को ले आईं ।
लेकिन मन में थीं घबराईं ॥

घर में अर्जन को भी पाया ।
लखकर उनका हिय हर्षाया ॥
जब तक सुभदा कुछ बतलातीं ।
पूरी गाथा वे कह पातीं ॥

अर्जुन ने सेन-प्रणाम किया ।
आसन का भी आह्वान किया ॥
यह देख सुभद्रा दंग हुई ।
कैसी गत अर्जुन संग हुई ??

तब सुभदा ने यह पूछ लिया ।
"किस विधि तुमने सत्कार किया ??
क्या अभी-अभी पहचाना है ?
या रिश्ता बहुत पुराना है ??"

यह सुनकर अर्जुन मुसकाए ।
चेहरे पर आभा भर लाए ॥
"बैठो, मैं तुम्हें बताता हूँ ।
विस्मय सब दूर भगाता हूँ ॥

"ये सखा हमारे गुरूतुल्य ।
इनमें प्रतिभा, करुणा अतुल्य ॥
संगीत, नृत्य में पारंगत ।
गायन कौशल में भी अद्भुत ॥

"ये इंद्रलोक भी जाते हैं ।
परियों को कला सिखाते हैं ॥
ये इंद्रदेव के साथी हैं ।
ये मन-विनोद अधिकारी हैं ॥

"हर विद्या बड़ी निराली है ।
इनका कौशल बलशाली है ॥
जब स्वर्ग-लोक मैं जाता था ।
तब भी इनसे मृदु नाता था ॥

"आने को था अज्ञातवाश ।
जारी रखा मैंने प्रयास ॥
मैं चित्रसेन के पास गया ।
मिल गया एक उत्साह नया ॥

"संगीत, नृत्य सब सिखलाया ।
गायन-वादन भी करवाया ॥
इस मद का ज्ञान नवीन दिया ।
कौशल में मुझे प्रवीण किया ॥

"गंधर्व सभी विद्या पाते ।
खुद इंद्रदेव इनको ध्याते ॥
इस विधि इनको गुरु मान रहा ।
इनकी प्रतिभा पहचान रहा ॥"

इतना सब तो ठीक था, हुईं सुभद्रा मौन ।
केशव के संकल्प को, इन्हें बताए कौन ??

तब बोलीं अर्जुन की ललना–
“मुझसे इक कर्म हुआ अदना ॥
यह पूनम अति दस्तूरी है ।
दीनों की मदद ज़रूरी है ॥

“धन, धाम, धरा देनी चाही ।
पर नहीं किसी को दे पाई ॥
इक वचन सेन जी ने माँगा ।
कह दिया मिलेगा मुँहमाँगा ॥

“अब कैसे इन्हें बचाऊँ मैं ?
अब कैसे वचन निभाऊँ मैं ??”
इतने में अर्जुन बोल पड़े–
“गंधर्वराज तो खूब लड़े ॥

“रण-कौशल में भी पारंगत ।
सब देव-दनुज भी विनयावत ।
इनसे जो बैर निभाएगा ।
वह चूर-चूर हो जाएगा ॥”

गंधर्वराज कुछ कह पाते ।
तारीफ स्वयं की सह पाते ॥
इतने में नारद जी आए ।
मुख पर ‘नारायण’ सुर छाए ॥

तीनों ने उन्हें प्रणाम किया ।
आसन देकर सम्मान दिया ॥
"हैं भाग्य हमारे उग आए ।
प्रातः मुनि के दर्शन पाए ॥"

कहकर अर्जुन अति मगन लगे ।
यह सुन नारद जी कहन लगे ॥
"अर्जुन मत इतना इतराओ ।
तुम घटना की तह में जाओ ॥

"केशव ने ये प्रण ठाना है ।
यमलोक इन्हें पहुँचाना है ॥
कुछ पुण्य कमाने को झटपट ।
सुभदा पहुँची थीं यमुना तट ॥

"फिर वचन सेन ने पाया था ।
या अभयदान हर्षाया था ॥
अब कैसे वचन निभाओगे ।
तुम कैसे इन्हें बचाओगे ??

"माधव विरुद्ध यदि जाओगे ।
खुद भी चपेट में आओगे ॥
सब सोच-समझकर ही करना ।
उनके विरुद्ध मत पग धरना ॥"

यह सुनकर सेन बड़े व्याकुल ।
हो गए सेन भयभीत विपुल ॥
'ये मुझको दिशा दिखाए हैं,
या मरवाने को आए हैं ??

'ये कैसे मित्र घनेरे हैं ।
मेरे दुर्दिन को घेरे हैं ॥'
सब सोच सेन घबराए थे ।
जीवन की आस लगाए थे ॥

तभी पार्थ ने गर्व से, रख दी अपनी बात ।
सुभदा का जो वचन है, देंगे उनका साथ ॥

तब अर्जुन ने बोल सुनाए ।
''चित्रसेन शरणागत आए ॥
शरणागत की रक्षा हित है ।
यह सबसे उत्तम परहित है ॥

''यही बात माधव कहते हैं ।
वे सबके हित में रहते हैं ॥
मैं छाया हूँ, वही तरू हैं ।
वे सृष्टि हैं, विश वगुरू हैं ॥

"चाहे वे समक्ष आ जाएँ ।
चाहे मुझको स्वर्ग दिखाएँ ॥
पर वामा का वचन निभाऊँ ।
चाहे साफ मृत्यु पा जाऊँ ॥"

चित्रसेन सुनकर मुसकाए ।
पहली बार अधर खिल आए ॥
वहीं सुभद्रा मग्न करारी ।
सोच रहीं– 'पति हैं अवतारी ॥

'हरदम मेरा मान बढ़ाते ।
हर मुश्किल में साथ निभाते ॥'
प्रभु की महिमा का करतब है ।
नारद जी का खेल गज़ब है ॥

समाचार सब फैलाते हैं ।
नहीं कहीं भी रुक पाते हैं ॥
अर्जुन की अद्यतन खबर है ।
इसमें थोड़ा आडंबर है ॥

नारद बोले– "जाना होगा ।
मुझको धर्म निभाना होगा ॥"
अब नारद प्रज्ञान हो गए ।
यह कह अंतर्ध्यान हो गए ॥

नारद आए द्वारिका, कहने को सब हाल ।
माधव राह निहारते, खड़े हुए तत्काल ॥

नारद-श्रीकृष्ण संवाद

बहुत देर से आस लगाए ।
माधव ख़ुश, जब नारद आए ॥
यह देखा नारद हर्षाए ।
पूरी बात उन्हें बतलाए ॥

नारद जी उचित उचार करें ।
"प्रभु थोड़ा आप विचार करें ॥
अर्जुन ने उसे रुकाया है ।
उसको निज शरण छिपाया है ।

"प्रभुवर! तुमको जाना होगा ।
अर्जुन को समझाना होगा ॥"
माधव ने तनिक विचार किया ।
फिर अपना मत विस्तार किया ॥

माधव बोले– "मुनिवर जाओ ।
मेरा संदेशा पहुँचाओ ॥
यह आप पार्थ को समझाएँ ।
उसकी सेवा से हट जाएँ ।

"यदि बात न मेरी मानेंगे ।
वे महायुद्ध ही ठानेंगे ॥
या चित्रसेन को ले आएँ ।
या छोड़ हस्तिनापुर जाएँ ।

"ये पूरी बात बता देना ।
अर्जुन को सब समझा देना ॥"
नारद ने शीश नवाया तब ।
'नारायण' घोष सुनाया तब ॥

वे जा पहुँचे अर्जुन के घर ।
सब सेन ध्यान में थे तत्पर ॥
संदेश प्रभू का पहुँचाया ।
सब हाल यथावत बतलाया ॥

सुन चित्रसेन के कान खड़े ।
पर पार्थ अविचलित रहे अड़े ॥
बोले– "वे अंतरयामी हैं ।
सारे जीवों के स्वामी हैं ॥

"उनका ही ज्ञान सुशोभित है ।
इससे ही यह तन जीवित है ॥
गिरिधर ने कर्मठ ज्ञान दिया ।
वचनों के प्रति सम्मान दिया ॥

"उनकी विद्या अपनाऊँगा ।
वचनों का मान निभाऊँगा ॥
ना छोड़ हस्तिनापुर जाऊँ ।
ना चित्रसेन को ले जाऊँ ॥

"यदि खुद ईश वर ललकारेंगे ।
हम महायुद्ध स्वीकारेंगे ॥
हे मुनिवर! यही बता देना ।
मेरी भी व्यथा सुना देना ॥

"मैं नत हूँ उनके चरणों से ।
पर बँधा प्रिया के वचनों से ॥
नहिं हरगिज वचन भंग होगा ।
विधि का विधिवत प्रसंग होगा ॥"

जो गीता का गुर पाया था ।
वह अर्जुन ने अपनाया था ।
यह सब सुन नारद मुसकाए ।
फिर लौट द्वारिका को आए ॥

जो सुना वही सब सुना दिया ।
माधव को सब कुछ बता दिया ॥
माधव भी मन में मुसकाए ।
शुभ-भाव पार्थ के हित आए ॥

पर वे भी थे संकल्पबद्ध ।
फँस गए ऋषि के क्रोध मध्य ॥
अब तो संकल्प निभाएँगे ।
वे उसको मार गिराएँगे ॥

बुलवाकर इक दूत को, दिया सघन आदेश ।
अर्जुन को तत्काल दो, महायुद्ध संदेश ॥

जब दूत हस्तिनापुर आया ।
वह प्रभु का संदेशा लाया ॥
"नारायण आने वाले हैं ।
सेना भी लाने वाले हैं ॥

"हे महाधनुर्धर बलशाली ।
कर सको तो कर लो रखवाली ॥
वे अपना धर्म निभाएँगे ।
दुश्मन को लेने आएँगे ॥

"यदि बाधा कोई आएगी ।
क्या प्रभु समक्ष टिक पाएगी ??
रह सको विनत तो रहो शुद्ध ।
वरना अब होगा महायुद्ध ॥"

कृष्ण-दूत की बात सुन, हुए पार्थ गंभीर ।
युद्ध हमें स्वीकार है, लेकर चले तुणीर ॥

अर्जुन ने कर ली तैयारी ।
हो गई खड़ी सेना सारी ॥
तब चित्रसेन आकर बोला ।
डरते-डरते मुँह को खोला ॥

"मैं भी सेना मँगवाता हूँ ।
खुद युद्ध-नीति अपनाता हूँ ॥
कायर बन कैसे मर जाएँ ?
मरना है, लड़कर मर जाएँ ॥

"जो विद्या तुमने पाई है ।
तुमसे ही मुझमें आई है ॥
मैं भी हुंकार भरूँगा अब ।
लड़ने से नहीं डरूँगा अब ॥"

यह सुन अर्जुन मुसकरा दिए ।
गर्दन को थोड़ा झुका दिए ॥
फिर सारी सेना सजवाई ।
अब महल सामने लगवाई ॥

गंधर्व सैन्य-दल आ पहुँचा ।
उसमें थे कई रथी अगुवा ॥
गंधर्व, यादवों संग खड़े ।
लखकर कांपे अरि बड़े-बड़े ॥

उत्साह भाव से भरे हुए ।
नारद मुनि थे कुछ डरे हुए ॥
सब देवों को बतला आए ।
यह महायुद्ध देखा जाए ॥

अर्जुन माधव हैं सदा, दो शरीर इक जान ।
फिर भी क्यों ये हो रहा, भीषण अनुसंधान ॥

युद्ध खंड

चल दीं दोनों सेनाएं, युद्ध-क्षेत्र की ओर ।
इस घटना ने रख दिया, देवों को झकझोर ॥

सब मायापति की माया है ।
ये समय यहाँ ले आया है ॥
जो होगा, होगा आर-पार ।
चल दिए कृष्ण होकर सवार ॥

माधव की सेना तेज़ चले ।
जैसे हनुमत का वेग चले ॥
सैनिक, घोड़े, गज, महारथी ।
सब बड़े एक से एक रथी ॥

गिरिधर पहुँचे जब अरावली ।
दिख गया सामने महाबली ॥
माधव कुछ पल को मुसकाए ।
फिर सीधे कथनों पर आए ॥

“मालुम था अर्जुन आओगे ।
तुम नहीं पीठ दिखलाओगे ॥
तुम अपना वचन निभाते हो ।
इसलिए श्रेष्ठ हो जाते हो ॥

“पर चित्रसेन अति व्याधी है ।
वह गालव का अपराधी है ॥
अब उसको दंड दिलाऊँगा ।
मैं वध करके ही जाऊँगा ॥”

सुनकर अर्जुन गंभीर हुए ।
गांडीव लिया, फिर तीर छुए ॥
नभ में वह तीर उछाल दिया ।
ग्रीवा में माला डाल दिया ॥

इस तरह कृष्ण को मान दिया ।
अर्जुन ने अति सम्मान किया ॥
बोले– “प्रभु! मुझे क्षमा करना ।
बन सकता नहीं उदारमना ॥

“मैं अपना वचन निभाऊँगा ।
जीते-जी, उसे बचाऊँगा ॥
सब शक्ति आपकी है मुझमें ।
कुछ कहाँ रहा मेरा मुझ में ॥

"पर यदि वध करने जाएँगे ।
मेरा करके जा पाएँगे ॥"
इतना सुन माधव कुपित हुए ।
"अब नहीं रहे तुम दूधमुँहे ॥

"मैं नहीं तुम्हारा वध चाहूँ ।
केवल बैरी को ले जाऊँ ॥
पथ से मैं तुम्हें हटाता हूँ ।
आगे बढ़ उसे मिटाता हूँ ॥"

माधव ने 'हमला' बोल दिया ।
सेना का मुखड़ा खोल दिया ॥
दौड़े सैनिक, दौड़े तुरंग ।
फिर दौड़ पड़े गजधर मलंग ॥

कर दिया कृष्ण ने सिंहनाद ।
हो गया युद्ध का शंखनाद ॥
अब अद् भुत महासमर होगा ।
सबकुछ अति प्रलयंकर होगा ॥

देखा सब सैनिक जूझ पड़े ।
हर ओर समर में टूट पड़े ॥
सब ओर उड़ रहे थे गुबार ।
छा गया गगन में अँधकार ॥

घोड़ों का ऐसा चला वेग ।
चट्टानें भी बन गईं रेत ॥
चल रहे बाण इस तरह प्रबल ।
कंपित अवनि, नभ, जल-मंडल ॥

तलवारों की टंकार खची ।
धरती पर हाहाकार मची ॥
फट रहीं भित्तियाँ कानों कीं ।
लाशें गिर रहीं जवानों कीं ॥

महासमर को देखकर, देव हुए बेचैन ।
अंतरयामी कृष्ण से, कौन कहे कुछ बैन ॥

दर्शक बनकर देखते, नभ से सारे देव ।
विधि-विधान को बाँधते, विधिवत श्री वसुदेव ॥

अर्जुन-दल पर हरि कूद पड़े ।
गंधर्व सैन्य पर टूट पड़े ॥
दस-दस सहस्र सैनिक अचेत ।
घुस गए रथी फिर गज समेत ॥

यह देख धनंजय हुए कुपित ।
करना होगा तत्काल उचित ॥
गांडीव पार्थ ने बढ़ा लिया ।
सम्मोहन सायक चढ़ा लिया ॥

नारायण दल पर छोड़ दिया ।
यह काम बहुत बेजोड़ किया ॥
सैनिक समस्त बेहोश हुए ।
सब महारथी ख़ामोश हुए ॥

तभी कृष्ण ने क्रोध में, उठा लिया सारंग ।
मही, गगन डोले सभी, मचा घोर आतंक ॥

हरि ने फिर वही कमाल किया ।
गंधर्वों को बेहाल किया ॥
गंधर्व पाश में बँधे पड़े ।
क्या ही कर सकते बड़े-बड़े ॥

खुद चित्रसेन नत-विनत खड़े ।
जो अब तक सबसे तेज़ लड़े ॥
देखें अब कैसे क्या होगा ?
आपस में युद्ध बड़ा होगा ॥

यह युद्ध भयंकर भारी था ।
ये शाम समय भी जारी था ॥
गालव भी इसको देख रहे ।
माधव की माया! राम अहे!!

यम, वरुण देव, तूफान, अनल ।
कर जोड़ सभी थे खड़े अटल ॥
अर्जुन किसका आह्वान करें ?
शर पर रखकर संधान करें ??

अर्जुन ने छोड़ा अग्नि-अस्त्र ।
माधव विचलित ना हुए त्रस्त ॥
फिर छोड़ दिया परजन्य अस्त्र ।
माधव के सूखे रहे वस्त्र ।

वायव्य अस्त्र तत्काल चला ।
प्रभु को छोड़ा, हर ओर टला ॥
अत्यंत अधिक भयकारी था ।
हर इक योद्धा अवतारी था ॥

कितना भी अस्त्र भयंकर हो ।
कितना भी वह प्रलयंकर हो ॥
वह नमन प्रभू को कर जाता ।
उनको क्षण एक न अजमाता ॥

होने को आया सूर्य अस्त ।
दोनों ही रण में दिखे त्रस्त ॥
सब देव त्रस्त, आतंकित थे ।
वे महाप्रलय से शंकित थे ॥

अंतिम पल भगवान ने, चला सुदर्शन चक्र ।
वह अर्जुन को छोड़कर, हुआ तनिक–सा वक्र ॥

चित्रसेन की ढाल हित, अंतिम बचा उपाय ।
पशुपत-अस्त्र प्रहार से, कोई ना बच पाय ॥

ज्यों माधव ने चक्र चलाया ।
पशुपत-अस्त्र पार्थ ने ध्याया ॥
लगी डोलने धरती भारी ।
जैसे महाप्रलय तैयारी ॥

देवों के सिंहासन डोले ।
कौन कहाँ किससे क्या बोले ??
क्षीर-सिंधु में हलचल जारी ।
जलने लगी प्रलय चिंगारी ॥

तब कैलाश कदाचित डोले ।
महादेव ने नयना खोले ॥
ब्रह्मा-विष्णु वहाँ पर आए ।
भय से ग्रस्त देवता पाए ॥

'त्राहिमाम' कह सभी पुकारें ।
महादेव प्रभु सृष्टि बचा लें ॥
पशुपत से जो टकराएगा ।
राख-राख सब हो जाएगा ॥

हे ईश वर मत देर लगाओ ।
जल्दी सारी सृष्टि बचाओ ॥
पशुपत केवल नहीं दिग्भ्रमित ।
सम्मुख चक्र सुदर्शन विचलित ॥

केवल आप बचा सकते हैं ।
वरना हम सब जा सकते हैं ॥
जब पशुपत-अस्त्र चला आया ।
यह देख सुदर्शन घबराया ॥

चक्र सुदर्शन जब चला, चित्रसेन की ओर ।
पशुपत के संधान में, लगा दिया सब जोर ॥

तभी सुदर्शन चक्र ने, बढ़ा दिया आवेग ।
पशुपत ने भी उसी क्षण, तीव्र कर दिया वेग ॥

सोचा निज काम किए जाऊँ ।
फिर भले नहीं मैं बच पाऊँ ॥
यह सोच सेन की ओर बढ़ा ।
हर देवदूत रह गया खड़ा ॥

सब देव-दनुज अतिशय व्याकुल ।
कैसे भी सृष्टि बचे वर्तुल ॥
धरती भी डगमग डोल रही ।
अंधड़ अपने पर खोल रही ॥

मेघों का विस्मय था कराल ।
गर्जना तड़ित की अति–विशाल ॥
उठ पड़ी अचानक महा–ज्वाल ।
आ पहुँचे जय श्री महाकाल ॥

रुक गया समय, सब लिया थाम ।
हो गई सांस भी वहीं जाम ॥
पशुपत भिड़ने को थे समक्ष ।
नत चित्रसेन आगे सवक्ष ॥

भय और कोप का मिला संग ।
बन गए सुदर्शन भी भुजंग ॥
कुछ पल में दोनों भिट जाते ।
सृष्टि मिटती, खुद मिट जाते ॥

शिव ने पशुपत को धार लिया ।
उद्गम जग का उद्धार किया ॥
कर जोड़ सेन को नत देखा ।
निज ज्ञान वहाँ उद्धृत देखा ॥

वे अल्पकाल को मुसकाए ।
वे निकट पार्थ के बढ़ आए ॥
उसने निज वचन निभाया था ।
भोले का मन हर्षाया था ॥

भोले माधव के निकट गए ।
यों मिले कि जैसे लिपट गए ॥
दोनों ने विनत-प्रणाम किया ।
विनिमय विधिवत अविराम किया ॥

शिव जी बोले– "हे प्रभु अनंत ।
तुम्हरी माया है दिग्दिगंत ॥
ईश्वर विचार स्पष्ट करो ।
मायापति माया नष्ट करो ॥

वे बात रुद्र की मान गए ।
उनको गुरुवर सम जान गए ॥
अपनी माया को नष्ट किया ।
प्रतिरूप तुरत स्पष्ट किया ॥

नत हुए कृष्ण मुसकान लिए ।
तब तक शिव अंतर्ध्यान हुए ॥
इतने में समय समान थका ।
क्या हुआ किसी को नहीं पता ॥

पर देव सभी पहचान गए ।
हरि-हर माया को जान गए ॥
अर्जुन भी थोड़ा जान गए ।
फिर चित्रसेन भी मान गए ॥

पशुपत गायब हो गया, सही हुआ सरकार।
सभी देव करने लगे, हरि-हर जय-जयकार॥

सृष्टि का संहार टल गया ।
अब पूरा मौसम बदल गया ॥
देवों ने जय-जयकार करी ।
सब ओर सुमन बौछार करी ॥

ढल गया सूर्य, हो गई शाम ।
हो गया समर का भी विराम ॥
हो गए सेन पर मेहरबान ।
दे दिया कृष्ण ने अभयदान ॥

सब ओर खुशी, सब ओर गान ।
लेकिन उल्टा था विधि-विधान ॥
कोई भी जीत न हार हुई ।
सबकी ही जय-जयकार हुई ॥

यह सबकुछ सबको ही भाया ।
पर एक व्यक्ति था गुस्साया ॥
"यह अच्छा बहुत मज़ाक हुआ ।
यह निर्णय तुरत तपाक हुआ ॥

इस तरह कृष्ण सम्मान करो ।
यों ही ऋषियों का मान हरो ॥
यह कैसा घोर झमेला है ?
मुझसे ही नाटक खेला है ॥

तुम सभी कर्मफल पाओगे ।
मुझसे ही मारे जाओगे ॥
तुझ, चित्रसेन, अर्जुन समेत ।
तीनों जीवन कर दूँ अचेत ॥

तीनों को मार गिराता हूँ ।
तप-बल से भस्म कराता हूँ ॥
कहकर करंक से लेकर जल ।
हो गए क्रोध से उथल-पुथल ॥

इतने में सुभदा पहुँच गई ।
उसने समझी हर बात नई ॥
सुभदा ने प्रण तत्काल किया ।
खुद ही मोरचा संभाल लिया ॥

बोलीं– "यदि पतिव्रत नारी हूँ ।
मोहन की भक्तन प्यारी हूँ ॥
तो ऋषि का कथन ठहर जाए ।
जल-बिंदु न महि पर पड़ पाए ॥

यह सुनकर मुनि के कान खड़े ।
लेकिन वे अब तक रहे अड़े ॥
गालव ने जल को छिड़काया ।
पर बूँद न नीचे गिर पाया ॥

यह कैसी अद्भुत नारी है!
वर्षों के तप पर भारी है ॥
मेरा कठोर तप हुआ मंद ।
ऐसा कर सकते प्रभु अनंत ॥

इस घटना से लज्जित भारी ।
गालव ने गलती स्वीकारी ॥
भगवान कृष्ण के पास गए ।
नत होकर उनके चरण गहे ॥

बोले– "प्रभुवर! मैं जान गया ।
कुछ देर सही, पर मान गया ॥
प्रभु! तुम ही अंतरयामी हो ।
सारी सृष्टि के स्वामी हो ॥

"मैं तुमको गुरू बनाता हूँ ।
मैं शिषवत् शीश झुकाता हूँ ॥
मुझको अनुचर स्वीकार करो ।
प्रभु मेरा सारा कोप हरो ॥"

आज युद्ध में हो गया, सब गुरुओं का मेल ।
विश्व-गुरू श्रीकृष्ण का, यह था अद्‍भुत खेल ॥

आषाढ़ी के अंत में, वार हुआ गुरुवार ।
पूर्णचंद्र फिर बन गया, यही गुरू-त्यौहार ॥

सभी लोग अब चल दिए, अपने-अपने धाम ।
चित्रसेन ने भी किया, सबको कोटि प्रणाम ॥

माधव ने उन्हें उठाया फिर ।
सीने से उन्हें लगाया फिर ॥
सभी लोग मन में हर्षाए ।
अपने-अपने घर को आए ॥

शिव मोहन यादव

परिचय: शिव मोहन यादव

जन्म: 01 मई, 1990; कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश

शिक्षा: एम.ए. (हिंदी साहित्य), नेट-जेआरएफ, एम.ए. (जनसंचार एवं पत्रकारिता)

संप्रति: N.C.E.R.T. में सहायक संपादक के पद पर कार्यरत।

प्रकाशित पुस्तकें: 'लल्ला और बिट्टी' (2018) 'सिंहों के अवतार तुम्हीं हो' (2020), 'उड़ने वाली कार' (2021), 'जंगल में मस्ती' (2022), 'चुनिंदा बाल कविताएँ' (2023), 'गन्ना' (2023)

अन्य प्रकाशन: दैनिक जागरण, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका, हिंदुस्तान, आज, जनसत्ता आदि प्रमुख समाचार-पत्रों में निरंतर लेखन। नंदन, चंपक, सुमन सौरभ, बालहंस, बालवाणी, किलकारी, बाल भास्कर, बालभारती, हंस, हिमप्रस्थ, सोमसी, समकालीन भारतीय साहित्य आदि में निरंतर लेखन।

अनुभव: दैनिक जागरण, अमर उजाला, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास-भारत में एक दशक से अधिक समय तक विभिन्न संपादकीय पदों पर कार्य करने का अनुभव।

गतिविधियाँ: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा बाल-साहित्य विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित। एससीईआरटी लखनऊ द्वारा आयोजित शिक्षकों की 'राज्य-स्तरीय कहानी सुनाओ प्रतियोगिता' में दो बार ज्यूरी-मेंबर। एनसीपीसीआर, भारत सरकार की कार्यशालाओं में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित। विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय बाल-साहित्य सम्मेलनों में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित। विद्यालयों-महाविद्यालयों में वक्ता, मोटिवेटर के रूप में आमंत्रित।

सम्मान-पुरस्कार: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'उमाकांत मालवीय युवा बाल-साहित्य पुरस्कार' (2017), 'पंडित प्रताप नारायण मिश्र युवा साहित्यकार सम्मान' (2018), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' युवा साहित्यकार सम्मान' (2018), 'अमर उजाला' का 'अतुल माहेश्वरी साहित्यकार सम्मान' (2019), बाल-साहित्य शोध संस्थान, बिहार का 'राजनारायण चौधरी बाल-साहित्य शिखर सम्मान' (2022), श्रीनाथद्वारा का 'बाल-साहित्य भूषण सम्मान' (2024)

World of Words
advik
Publication Pvt Ltd

ISBN: 978-81-977724-7-4
9 788197 772474
MRP Rs. 160/-

पुस्तक खरीदने के लिए
9560397075
advikpublication.com
amazon.in